THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.52

मदरसों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में संस्थागत वातावरण की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन

जुनैद खान[1] डॉ. मोहम्मद इमरान[2]

[1]शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, आचार्य नरेंद्र देव टीचर्स ट्रेनिंग पी.जी. कॉलेज सीतापुर
Email- zunaidkhan7161@gmail.com

शोध सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में संस्थागत वातावरण की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। यह शोध अध्ययन मुख्य रूप से सामान्य शैक्षणिक संस्थानों पर आधारित शोध अध्ययनों से प्राप्त सिद्धांतों और निष्कर्षों पर केंद्रित है। उपलब्ध शोध साहित्य से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास को न केवल माता–पिता तथा उसके पूर्वजों से मिले आनुवांशिक गुण प्रभावित करते हैं बल्कि विद्यार्थी जिस वातावरण में जीवन यापन करता है तथा जिन लोगों के सम्पर्क में रहता है, जिन संस्थाओं तथा संगठनों से उसका सम्बन्ध रहता है उसका भी प्रभाव पड़ता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को घरेलू वातावरण, शिक्षक के गुण, विद्यालय का वातावरण, साथी– समूह के गुण, आस–पास का सामाजिक वातावरण, परिवार की आर्थिक स्थिति का प्रभाव तथा इंटरनेट आधारित आधुनिक डिजिटल उपकरणों जैसे स्मार्टफोन, मोबाइल फोन टैब आदि संसाधनों का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव बालक के व्यक्तित्व के विकास पर पड़ता है।

मुख्य शब्द मदरसा, व्यक्तित्व विकास, संस्थागत वातावरण, डिजिटल उपकरण

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करना भी है। शिक्षा विकास की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति शैश्वावस्था से परिपक्वता तक के गुणों को धीरे– धीरे अपनाता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्व विकास में संस्थागत वातावरण बहुत महत्वपूर्ण है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, बालक के व्यक्तित्व के विकास पर आनुवंशिकता और वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास पर आनुवंशिकता से अधिक प्रभाव वातावरण का पड़ता है। विद्यार्थियों में गुणों के विकास पर परिवार, समुदाय तथा संस्था के वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

व्यक्तित्व शब्द लैटिन शब्द पर्सोना से लिया गया है, इसका अर्थ किसी मंच पर अभिनय करते समय अभिनेता द्वारा धारण किया जाने वाला मुखौटा होता है। इस प्रकार व्यक्तित्व का अर्थ किसी व्यक्ति के बाहय गुणों में उसका पहनावा, वाणी, शारीरिक क्रियाएं, आदतें, और भाव शामिल है। इस प्रकार अच्छे बाहय गुणों से संपन्न व्यक्ति को अच्छा व्यक्तित्व वाला

माना जाता है यद्यपि व्यक्तित्व उन गुणों का अनूठा संयोजन है जो मनुष्य के व्यवहार, विचार प्रेरणा, और भावना को प्रभावित करता है। यह व्यक्तियों को लगातार विशिष्ट तरीकों से सोचने, महसूस करने, और व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है।

आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व व्यक्ति के साथ उन मनो–शारीरिक संस्थान का गतिशील संगठन है जो वातावरण में उसका अद्वितीय समायोजन निर्धारित करते हैं (आल्पोर्ट, 1938)।

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में संस्थागत वातावरण का महत्व

किसी भी विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास में उसके संस्थागत वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संस्थागत वातावरण से तात्पर्य विद्यालय के अंदर विद्यमान सम्पूर्ण शैक्षिक वातावरण से है जिसमें शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का संचालन होता है। इसमें शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ विद्यार्थियों के समग्र विकास से सम्बन्धित विभिन्न सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। संस्थागत वातावरण विद्यार्थियों में न केवल शिक्षण–अधिगम को प्रभावित करता है बल्कि उनके मानसिक, सामाजिक, भावात्मक, तथा नैतिक विकास में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (वल्लेजो, 2018)। अतः जिस संस्था में शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्ध सकारात्मक होंगे तथा प्रशासनिक व्यवस्था बेहतर होगी उस संस्था की शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली होंगी। एक सकारात्मक संस्थागत वातावरण विद्यार्थी में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता, तथा नेतृत्व क्षमता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (कोहेन तथा अन्य, 2009)। इसके अलावा संस्था के सम्पूर्ण वातावरण जैसे अनुशासित गतिविधियां, चर्चा–परिचर्चा, तथा लोकतांत्रिक वातावरण, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिस संस्था के कक्षा का वातावरण सहयोगात्मक तथा सुरक्षात्मक होता है उस संस्था के विद्यार्थियों को खुलकर अपने विचारों तथा भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर मिलता है। एक सकारात्मक संस्थागत वातावरण विद्यार्थियों के सामाजिक अंतःक्रिया को सुदृढ़ बनाता है (फ्रेजर, 2012)।

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव

किसी भी संस्था का वातावरण एक ऐसा कारक है जो विद्यार्थियों को प्रभावित करता है और उसके व्यक्तित्व में परिवर्तन लाता है। संस्था का वातावरण व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण मंच होते हैं जिसमें विद्यार्थियों को प्रतिदिन 6 से 7 घंटे व्यतीत करते हैं। परिवार के अतिरिक्त अत्यधिक समय विद्यालय वातावरण में रहना उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ–साथ व्यक्तित्व के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। थॉमसन के अनुसार विद्यालय विद्यार्थियों का मानसिक, चारित्रिक, सामुदायिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विकास करता है तथा स्वस्थ रखने के लिए प्रशिक्षण देता है। क्योंकि संस्थानों में ही यह सामर्थ्य है कि वे विद्यार्थियों में समाजीकरण जैसे गुणों को उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों को समाज के प्रति आदर सम्मान, देश सेवा, तथा ज्ञान अर्जन जैसे गुणों का विकास सम्भव हो पाता है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में संस्थाओं का विशेष योगदान रहा है। प्रायः यह देखा गया है कि विभिन्न संस्थाओं में संतुलित शिक्षा नहीं प्रदान की जाती है अथवा विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर पूर्ण रूप से ध्यान नहीं दिया जाता है। इन संस्थाओं के अन्तर्गत शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के सहपाठियों का प्रभाव विद्यार्थी के व्यक्तित्व पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यालय में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों का नैतिक स्तर ऊंचा हो सभी विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से स्थिर बने, वे शारीरिक रूप से स्वस्थ तथा सामाजिक रूप से व्यावहारिक हो ताकि वे परिवार व समाज में अपने आप को समायोजित कर सकें। विद्यार्थियों में उक्त योग्यताओं और क्षमताओं के विकास के लिए यह आवश्यक है कि संस्था का वातावरण अनुकूल स्थितियों से युक्त हो। विद्यालय वातावरण को सुरक्षित एवं प्रेरणादायक बनाने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक अपने स्नेहपूर्ण व्यवहार, प्रभावी शिक्षण शैली, तथा अनुशासन

द्वारा विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। विद्यार्थी हमेशा से शिक्षक को हितैषी तथा सही मार्ग दिशा दिखाने वाला मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किया है। विद्यालय में शिक्षकों का विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक व्यवहार, स्वयं का व्यक्तित्व एवं उत्तम चरित्र ऐसी कई बातें हैं जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

शोध अध्ययन की आवश्यकता

व्यक्तित्व विकास सतत चलने वाली प्रक्रिया है। समग्र तथा सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास न केवल संस्थागत वातावरण बल्कि आस–पास का सामाजिक वातावरण जिसमें विद्यार्थी समय व्यतीत करता है, द्वारा भी होता है। व्यक्तित्व विकास के सम्बन्ध में यह सामान्य धारणा रही है कि भारतीय संस्कारों, संस्थानों का परिवेश, विद्यार्थियों के साथी–समूहों का वातावरण तथा विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों का कार्य, व्यवहार एवं व्यक्तित्व भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास की प्रारम्भिक अवस्था है जिसका विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकि मदरसों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास काफी हद तक संस्थागत वातावरण पर निर्भर करता है किन्तु

इस सन्दर्भ में उपलब्ध शोध अध्ययन अत्यन्त सीमित हैं। वर्तमान में बदलते हुए शैक्षिक परिदृश्य में विद्यार्थियों को धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ जीवन कौशल शिक्षा, सम्प्रेषण क्षमता, तथा नैतिक मूल्यों की भी आवश्यकता होती है। व्यक्तित्व विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि बाल्यावस्था से ही विद्यार्थियों की शिक्षा–दीक्षा ऐसे परिवेश में हो जिससे विद्यार्थियों में व्यक्तित्व का विकास समग्र, तथा सर्वांगीण, सकारात्मक तथा सृजनात्मक दिशा में कार्यशील करने में सहायक हो सकें। इसके लिए न केवल पारिवारिक संस्कारों का बल्कि मदरसा वातावरण एवं शिक्षकों के शीलगुणों का विशेष प्रभाव विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में कहाँ तक प्रभावित करता है यह भी जानना आवश्यक है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. मदरसों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के सन्दर्भ में संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन

1. **पाल, प्रतिभा (2016)** ने बालकों तथा बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास पर विद्यालय के प्रभाव का मूल्यांकन किया। अध्ययन के प्राप्त निष्कर्ष से पता चलता है कि बालक तथा बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास के मुख्य अवयव के रूप में विद्यालय एवं विद्यालय गतिविधियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। व्यक्तित्व विकास निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है इसलिए इसका सामाजिक स्तरीकरण भी होता रहता है जिसके मुख्य अवयवों के रूप में घर तथा सामाजिक परिवेश के पश्चात विद्यालय भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है। विद्यालय गतिविधियों के दौरान अपने दैनिक समय में 6 से 7 घंटे तक बालक एवं बालिकाओं का विद्यालय वातावरण तथा शिक्षकों से सीधा सम्पर्क में रहता है इसलिए ऐसी स्थिति में विद्यालय का वातावरण शिक्षकों तथा सहपाठियों के व्यक्तित्व का प्रभाव बालक तथा बालिकाओं पर अधिक पड़ता है।

2. **आलम, गुफरान (2020)** ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर विद्यालय के वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना कि क्या माध्यमिक विद्यालय के लड़के तथा लड़कियों के व्यक्तित्व विकास में कोई महत्वपूर्ण अंतर है तथा क्या सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में कोई महत्वपूर्ण अंतर है। अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि कक्षा का वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि विद्यार्थी कक्षा के वातावरण से असहज महसूस करते हैं तो

उनका पाठ पर ध्यान कम लगेगा, इसलिए उन्हें शिक्षक से केवल थोड़ी सी जानकारी मिलेगी तो उनके ग्रेड प्रभावित होंगे। कक्षा वातावरण जितना अधिक मैत्रीपूर्ण

होगा विद्यार्थियों के बीच उतनी ही अधिक सीखने की प्रवृत्ति होगी। जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों का व्यक्तित्व का विकास स्वतः ही होगा। इसके अलावा विद्यार्थियों द्वारा अनुभव किये जाने वाले विद्यालय वातावरण की गुणवत्ता, विद्यालय की गतिविधियों में उनकी भागीदारी को प्रभावित करती है।

3. **कुमारी, वीणा (2020)** ने बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों एवं अभिभावकों की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन किया। अध्ययनकर्ती द्वारा बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों और विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना। बालकों के व्यक्तित्व विकास में अभिभावकों एवं घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन मुख्य रूप से किया गया। शोध अध्ययन में पाया गया कि बालक के व्यक्तित्व विकास को न केवल माता–पिता एवं पूर्वजों से मिले आनुवंशिक गुण ही प्रभावित करते हैं, बल्कि जिस वातावरण या परिवेश में बालक निवास करता है उसका भी प्रभाव बालक के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। शोध अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि बालक के व्यक्तित्व विकास में न केवल शिक्षकों और अभिभावकों की ही भूमिका होती है, बल्कि बालक का सम्बन्ध जिन संस्थाओं और संगठनों से होता है उसका भी प्रभाव बालक के व्यक्तित्व विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। इसके अलावा बालक के व्यक्तित्व के विकास को विद्यालय वातावरण तथा घरेलू वातावरण, साथी–समूह एवं आसपास का सामाजिक वातावरण, धर्म एवं संस्कृति, सांस्कृतिक परम्पराओं एवं परम्परागत रीति–रिवाजों का प्रभाव भी पड़ता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि बालक के व्यक्तित्व के विकास पर इंटरनेट आधारित अत्याधुनिक डिजिटल उपकरणों जैसे स्मार्टफोन, मोबाइल फोन, टैबलेट, आदि उपकरणों का भी प्रभाव पड़ता है।

4. **कादरी, सुरैया (2021)** ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर कक्षा वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच कक्षा वातावरण के प्रति धारणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर है। अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर पाया गया कि कक्षा वातावरण और माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध है। अतरू यह निष्कर्ष निकलता है कि कक्षा वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है।

5. **प्राहमभट्ट, प्रहारसा (2024)** द्वारा कॉलेज के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व विकासरू एक विस्तृत विश्लेषण का अध्ययन किया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि किसी व्यक्ति का व्यवहार, दृष्टिकोण, और जीवन में सफलता उसकी व्यक्तित्व विकास से अधिक प्रभावित होती है। यह अध्ययन कॉलेज के विद्यार्थियों पर व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले विभिन्न पर्यावरणीय, सामाजिक और शैक्षिक प्रभावों का अध्ययन करता है। शैक्षणिक चुनौतियां, सहपाठी से सम्बन्ध और सह–पाठ्यक्रम गतिविधियां, सामाजिक कौशल, और नेतृत्व जैसे गुण व्यक्तित्व विकास में अहम भूमिका निभाती है।

6. **वारसी, एल.बी., मुमताज, एस., यासीन एफ. (2025)** द्वारा माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में विद्यालय के वातावरण की भूमिका का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में दो निम्न उद्देश्यों को निर्धारित किया गया। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में विद्यालय वातावरण की भूमिका में अध्यापक की धारणा की जांच करना। उन कारकों की पहचान करना जो विद्यालय को अच्छा वातावरण बनाने में मदद करते हैं तथा माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की व्यक्तित्व विकास पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि विद्यालय वातावरण और व्यक्तित्व विकास के बीच मजबूत सम्बन्ध है। जो विद्यार्थियों को अपने विद्यालय वातावरण में सुरक्षा, सहायता और समावेश

महसूस करते हैं, उनमें सकारात्मक आत्म–संप्रत्यय, आत्म–सम्मान, लचीलापन, तथा सहानुभूति विकसित होती है। विद्यालय वातावरण को बनाने और विद्यार्थियों की वृद्धि और विकास पर प्रभाव डालने में अध्यापक की अहम भूमिका होती है। सहायक भौतिक वातावरण तथा सकारात्मक अध्यापक–विद्यार्थी सम्बन्ध एक सकारात्मक विद्यालय वातावरण को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके अलावा शोध में यह भी पाया गया है कि जिन विद्यार्थियों में अपने आप को विद्यालय वातावरण में सुरक्षित तथा समर्थित महसूस करते हैं उनमें सकारात्मक व्यक्तित्व विकास होने की अधिक सम्भावना होती है। अध्ययन में सकारात्मक विद्यालय वातावरण से जुड़े विभिन्न कारकों की पहचान भी की गयी जो व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

7. **जैन, शिखा तथा जैन, अभिलाष कुमार (2026)** द्वारा विद्यालीय वातावरण और छात्रों के व्यक्तित्व विकास का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्यों में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों (सरकारी, निजी, सह– शैक्षिक एवं एकल–लिंग विद्यालयों) के वातावरण की तुलना करना और यह ज्ञात करना कि कौन सा वातावरण छात्रों के व्यक्तित्व विकास के लिए अधिक अनुकूल है। तथा विद्यालय वातावरण के प्रमुख आयामों (भौतिक, सामाजिक, शैक्षणिक) और छात्रों के व्यक्तित्व विकास के घटकों (भावनात्मक स्थिरता, आत्मविश्वास, नेतृत्व, रचनात्मकता आदि) के मध्य सम्बन्ध का विश्लेषण करना था। इस अध्ययन के प्राप्त परिणामों से यह सिद्ध होता है कि विद्यालय वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रत्यक्ष और गहरा प्रभाव पड़ता है। निजी एवं सह–शैक्षिक विद्यालयों में विद्यार्थियों का आत्मविश्वास, रचनात्मकता एवं सामाजिक व्यवहार अपेक्षाकृत अधिक सशक्त पाया गया, जिसके कारण बेहतर अधिगम संसाधन, प्रेरक शिक्षण विधि और सहभागितापूर्ण वातावरण है। सरकारी विद्यालयों में भौतिक सुविधाओं और शिक्षक–विद्यार्थी संवाद की कमी के कारण आत्म–प्रेरणा और रचनात्मकता का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया। एकल–लिंग विद्यालयों में अनुशासन अधिक था, लेकिन सामाजिकता और संवाद– कौशल में कमी पायी गयी।

वर्तमान समय में मदरसा केवल धार्मिक शिक्षा तक सीमित नहीं है बल्कि वे आधुनिक विषयों जैसे– गणित, विज्ञान, भाषा तथा सामाजिक अध्ययन जैसे पाठ्यक्रम को सम्मिलित कर रहे हैं।

मदरसों के संस्थागत वातावरण के सन्दर्भ में समीक्षा

उपरोक्त अध्ययनों में संस्थागत वातावरण के महत्त्व एवं इसकी उपयोगिता पर विभिन्न तर्क प्रस्तुत किये गये हैं। पाल, प्रतिभा (2016) के अनुसार बालक तथा बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास पर संस्था में होने वाली गतिविधियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मदरसों के संस्थागत वातावरण पर भी विभिन्न गतिविधियों का प्रभाव होता है। अतः मदरसों में अध्ययन के साथ–साथ विभिन्न गतिविधियों का भी आयोजन होना चाहिए।

आलम, गुफरान (2020) के अनुसार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर कक्षा वातावरण की गतिविधियां अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। चूँकि कक्षागत गतिविधियों में बालक की समस्त ज्ञानेन्द्रियाँ सक्रिय रहती हैं और इससे उसका सर्वांगीण विकास होता है। अतः मदरसों के संस्थागत वातावरण के सन्दर्भ में कक्षा वातावरण की गतिविधियां जैसे– पाठ का वाचन एवं श्रवण, प्रश्न उत्तर विधि, विद्यार्थियों द्वारा पाठ प्रस्तुति, कक्षा अनुशासन तथा शिष्टाचार, परियोजना कार्य का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसलिए मदरसों के कक्षा वातावरण की गतिविधियों के साथ–साथ सामाजिक एवं नैतिक गतिविधियों का भी आयोजन आवश्यक है।

कुमारी, वीणा (2020) के अनुसार बालकों के व्यक्तित्व विकास पर न केवल माता–पिता एवं पूर्वजों से मिले आनुवांशिक गुण प्रभावित करते हैं बल्कि विभिन्न कारकों जैसे– बालक के साथी समूह, बालक के आसपास का सामाजिक वातावरण, धर्म एवं सांस्कृतिक परम्परा तथा इंटरनेट आधारित अत्याधुनिक डिजिटल उपकरणों जैसे– स्मार्टफोन, मोबाइल फोन,

टैबलेट आदि उपकरणों का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आधुनिक युग तकनीकी का युग है। विभिन्न तकनीकी उपकरणों का उपयोग कर विद्यार्थी स्वयं को अधिक गुणवक्तापूर्ण एवं कौशल युक्त विधायों में पारंगत कर सकते हैं। विभिन्न सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय आयोजनों द्वारा विद्यार्थी स्वयं एक जागरूक एवं कुशल नागरिक के रूप में विकसित कर सकते हैं। इसलिए मदरसों में धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ विभिन्न राष्ट्रीय जागरूकता अभियानों से सम्बन्धित गतिविधियां जैसे– एक भारत श्रेष्ठ भारत, फिट इंडिया मूवमेंट, डिजिटल इण्डिया जागरूकता अभियान, आत्मनिर्भर भारत आदि जागरूकता अभियानों के साथ–साथ सामाजिक जागरूकता अभियानों का भी आयोजन होना चाहिए।

कादरी, सुरैया (2021) के अनुसार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को कक्षा वातावरण प्रभावित करता है। अतः मदरसों का कक्षागत वातावरण भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास में प्रभावशाली भूमिका निभाता है। इसलिए मदरसों के कक्षा में आधुनिक शिक्षण विधियाँ जैसे– विद्यार्थी– केन्द्रित दृष्टिकोण,

पूछतांच–आधारित शिक्षण, फ्लिप्ड क्लासरूम, खेल आधारित शिक्षा, समस्या– समाधान शिक्षा, ऑडियो–वीडियो विजुअल साधनों द्वारा शिक्षण, परियोजना–आधारित शिक्षण, तथा डिजिटल शिक्षण सामग्री का उपयोग करके विद्यार्थियों में रुचि, सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन तथा कौशल विकास के साथ–साथ व्यक्तिव के सम्पूर्ण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः मदरसों में इन शिक्षण विधियों को लागू किया जाना चाहिए।

प्राहमभट्ट, प्रहारसा (2024) के अनुसार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर संस्था में होने वाली शैक्षणिक गतिविधियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः मदरसों में विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों जैसे संगोष्ठी, सम्मेलन, ज्ञान प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, समूह चर्चा, शिक्षक छात्र संवाद, विषय आधारित वाद विवाद, तथा लेखन प्रतियोगिता का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव पड़ना नैसर्गिक है। इसलिए मदरसों में शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ बौद्धिक गतिविधियों का भी आयोजन अवश्य किया जाना चाहिए।

वारसी. एल. बी., मुमताज आदि (2025) के अनुसार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर विद्यालय वातावरण से सम्बन्धित विभिन्न सकारात्मक कारकों का प्रभाव पड़ता है। अतः मदरसों के संस्थागत वातावरण से सम्बन्धित सकारात्मक कारकों जैसे शिक्षक विद्यार्थी सम्बन्ध, शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं लगाव, विद्यार्थियों का आत्म–संप्रत्यय एवं आत्मविश्वास, सामुदायिक सहभागिता, अनुशासित कक्षा वातावरण, तथा शिक्षकों का विद्यार्थियों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार, शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता, प्रधानाचार्य का संस्था के प्रति प्रभावी नेतृत्व आदि का प्रभाव विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः मदरसों में विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यक्तिगत विकास से सम्बन्धित समस्याओं के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराना चाहिए।

जैन, एस. तथा जैन, ए. के. (2026) के अनुसार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर विद्यालय वातावरण का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अतः मदरसों के संस्थागत वातावरण में शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियों का प्रभाव भी पड़ता है। अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियाँ जैसे– क्रीडा तथा खेल से सम्बन्धित गतिविधियाँ क्रिकेट, वालीबाल, टेनिस, टेबल टेनिस, फुटबाल, कैरम, पजल आदि सभी खेलों की इंटर– हाउस प्रतियोगिताएं आयोजित करना चाहिए। व्यायाम से सम्बन्धित गतिविधियाँ इच्छुक विद्यार्थियों के लिए जिमनास्टिक्स, मार्शल आर्ट्स, एरोबिक्स इत्यादि की व्यवस्था करना आवश्यक है। इसलिए मदरसों में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों के साथ साथ चित्रकला, ड्राइंग, पेंटिंग तथा प्रदर्शन कला आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन भी करना चाहिए।

निष्कर्ष

बालकों की शिक्षा का दायुत्व राज्य के साथ–साथ उनके माता पिता का भी होता है। प्रत्येक अभिभावक अपने बालकों को उच्च गुणवक्तायुक्त शिक्षा देना चाहते हैं। समाज में बालकों का बड़ा वर्ग मदरसा शिक्षा से आच्छादित है। अतः यह आवश्यक है कि ये बालक भी अन्य बालकों की भांति गुणवक्तापूर्ण शिक्षा ग्रहण कर सकें। इसके लिए आवश्यक है कि मदरसों का शैक्षिक वातावरण अन्य संस्थाओं की भांति बालकों के व्यक्तित्व विकास में रचनात्मक सुधार करें। वर्तमान अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बालकों का व्यक्तित्व संस्थागत वातावरण से बहुत अधिक प्रभावित होता है। अतः आवश्यक है कि मदरसों में वे सभी गतिविधियों का संचालन किया जाये जो कि समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। इसके साथ–साथ अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि बालक का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पक्ष भी व्यक्तित्व विकास में प्रभावी कारक है। आधुनिक उपकरणों का उचित उपयोग मदरसों के विद्यार्थियों को भी सकारात्मक लाभ पहुंचा सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

- अवस्थी, डी.के. (2010). बच्चों के व्यक्तित्व विकास में विद्यालयीय वातावरण का प्रभाव. Shri Prbhu Pratibha, (1). Retrieved on October 14,2025, from http://shriprbhu.blogspot.com/2010/01/blog-post.html
- पाल, प्रतिभा. (2016). बालकों तथा बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास पर विद्यालय के प्रभाव का मूलयांकन. International Journal of Applied Research, 3(1), 1035-1038. Retrieved on October 14,2025, from https://www.allresearchjournal.com/archives/2017/vol3issue1/PartL/7-9-106-704.pdf
- Alam, G. (2020). Effect of School Climate on Personality Development of Secondary School Students. International Journal of All Research Education & Scientific Methods, 8(10), 496-504. Retrieved on October 14,2025, from https://www.ijaresm.com/uploaded_files/document_file/Gufran_Alam_2UU4O.pdf
- कुमारी, वीणा. (2020). बालको के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों एवं अभिभावकों की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन. SHODH SANGAM, 624-631. Retrieved on October 15,2025, from /shodhsamagam.com/uploads/issues_tbl/Balko%20ke%20Vayaktitav%20vikas%20mai%20Shikshako%20awam%20abhibhawako%20ki%20bhumita%20ka%20samikshatamak%20addhyan.pdf
- Quadri, S. (2021). Impact of Classroom Climate on Personality Development of Secondary School Students. International Journal of Scientific Research and Engineering Development, 4(4), 925-934. Retrieved on October 15,2025, from https://ijsred.com/volume4/issue4/IJSRED-V4I4P126.pdf
- Brahmbhatta, P. (2024). PERSONALITY DEVELOPMENT AMONG COLLEGE STUDENTS: AN EXTENSIVE ANALYSIS. International Journal of Creative Research Thoughts, 12(7), 731-737. Retrieved on October 15,2025, from https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2407090.pdf
- Warsi, L. B., Mumtaz, S., Yaseen. F. (2025). Role of School Climate in Students' Personality Development at Secondary Level. Southern Journal of Social Sciences, 3(1), 73-94. Retrieved on October 16,2025, from https://sjss.isp.edu.pk/index.php/about/article/view/51/35

- Cohen, J., McCabe, E. M., Michelli, N. M., & Pickeral, T. (2009). School climate: Research, policy, practice, and teacher education. Teachers College Record, 111(1), 180-213. Retrieved on December 24,2025, from file:///C:/Users/HP/Downloads/SchoolClimatePaperTCRecord.pdf
- जैन, शिखा, जैन, ए. के. (2024). विद्यालयी वातावरण और छात्रों के व्यक्तित्व विकास का तुलनात्मक अध्ययन. International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM), 8(9), 1-11. Retrieved on January 10,2026, from DOI: 10.55041 /IJSREM37616

Cite this Article:

जुनैद खान[1] डॉ. मोहम्मद इमरान[2], "मदरसों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में संस्थागत वातावरण की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-471–478, Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

जुनैद खान[1] डॉ. मोहम्मद इमरान[2]

For publication of Research Paper title

मदरसों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में संस्थागत वातावरण की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.52